घर–घर

आज मै २२ साल का हूम, लेकिन मैने जवानी के खेल खेलने १६ साल
मेम ही शुरु कर दिये थे और ये खेल मैने अपनी छोटी बहन '
सरीता के साथ खेले थे. ंएरे घर मेम पापा, मम्मी, सरीता(१३
साल) , शिल्पि(१ साल) और मै रहते थे . ःअमारी समर वेकेशन्स
चल रहीम थी. पापा तो सुबह ही कां पर चले जाते और शां को
घर आते थे और मम्मी सारा दिन कां मेम बिज़ी रहती थी.एक दिन
दुपहर के वक्त खाना खा के मै और सरीता टी.वी. देख रहे थे. मम्मी

और शिल्पि सो रहे थे. इतने मेम ही लाईट चली गयी. अब मै और

सरीता बोर हो रहे थे.
"भैया, लाईट तो चली गयी, अब क्या करेम?"
"कुछ खेलते हैम"
"क्या"
"लुडो"
"मेर दिल नहीम कर रहा"
"साम्प सिढी"
"नो"
"घर घर"
"उ म म...ठीक है"
"पर यहाम तो बहुत गर्मी है, चल ऊपर वाले कमरे चल के खेलते
हैम"
हमारा घर डबल–स्टोरीड है. ंऐ और सरीता फ़र्स्ट फ़्लौर वाले
रूं
मेम चले गये
"भैया मम्मी ने अगर हमे आवाज़ लगायी तो सुनाई नहीम देगी
यहाम
पर"

"मम्मी तो अभी कं से कं २ घन्टे सोती रहेगी और शिल्पि तो पूरे

दिन सोती रहती है"
"पर हं घर घर मेम खेलेन्गे क्या?"
"उम्म..मै डाक्टर हूम और तुं मरीज . तुं मेरे पास दिखाने आओगी"
खेल शुरु....
"नेक्ट"
"हेल्लो डाक्टर साब, मेर नां मधु है"
"हेल्लो.येस..मधु जी..क्या प्रोब्लं है आपको"
"डाक्टर साब मेरे पेट मेम अक्सर दर्द रहता है"
"आप सामने बेम्च पर लेट जा–ई–ये"
सरीता जाकर बेड पर लेट गयी. सरीता ने उस दिन ग्रीन कलर का
सलवार–
कमीज़ पहना हुआ था. फिर मै भी बेड कि साईड पर जाकर बैठ
गया
"येस.मधु जी.पेट मेम किस जगह दर्द होता है आपको"
सरीता ने अपनी नाभी पर हाथ रख कर बताया "डाक्टर..इस जगः
होता है दर्द"
"आप ज़रा अपनी कमीज़ थोडी ऊपर करेम्गी"
इस सरीता ने पूछा "असली मेम भैया"
"हाम"
सरीता ने अपनी कमीज़ ऊपर कर दी. फिर मैने सरीता के पेट पर हाथ

फ़ेरना शुरु किया.सरीता थोडा सा शर्मा रही थी
"क्या दर्द हमेशा यहीम होता है?"
"जी डाक्टर"
"अब मै आपके पेट को दबाऊम्गा , जहाम दर्द हो वहाम बताना"
मै सरीता के पेट को अपने हाथोम से दबाने लगा. इस पर मेरा
लौडा
खडा होने लगा.मेरी नज़र सरीता की जवनी पर पडने लगी.सरीता की
स्कीन बहुत सोफ़्ट और स्मूथ थी.
सरीता को भी मेरा दबाना अच्छा लग रहा था. ऐ कुछ देर तक तो

पेट

को दबाता रहा लेकिन अब मै सरीता का एक एक अम्ग दबाना चाहता था

"यः दर्द कब कब होता है आपको"

"रोज़ सुबः उठते ही..और कभी कभी तो चेस्ट मेम भी होता है..पैन"

"चेस्ट मेम...चेस्ट मेम किस जगः"

"बिल्कुल बीच मेम"

"देखना पडेगा.कमीज़ थोडा और ऊपर किजीए"

सरीता को मज़ा आ रहा था और वो इस खेल को और खेलना चाहती थी. एरा तो लौडा बेकाबु सा होता जा रहा था. सरीता को मज़ा तो आ रहा था पर वो शर्मा रही थी

"भैया कमीज़ और ऊपर मत करो,"

"पर सरीता हं तो खेल ही रहे हैम.कौनसा असली मेम कर रहे हैम"

"डाक्टर साब..कमीज़ ऊपर मत कीजीये, मैने पहनी नहीम "

"क्या नहीम पहनी"

"म्म्म..ब्रा"

"पर क्योम नहीम पहनी"

"मुझे अन्डरगारमेन्ट्स मेम कंफ़र्टेबल फ़ील नहीम होता.आप कमीज़ और ऊपर मत कीजीये, कमीज़ के अन्दर हाथ डाल के देख लीजीये"

"ठीक है"

मैने सरीता की कमीज़ मेम हाथ डाला और पूछा

"कहाम दर्द होता है"

"दोनो के बीच मेम"

"क्या.यु मीन दोनो ब्रेस्ट के बीच मेम?"

"हाम"

मै सरीता के बूब्स के बीच के पार्ट को दबाने लगा लेकिन मै तो सरीता के बूब्स को दबाना चाहता था

"बस बीच मेम ही दर्द होता है क्या?"

"नहीम डाक्टर कभी कभी तो पूर–रे चेस्ट मेम होता है"

सरीता के इतने कहने कि देर थी कि मैने अपने दोनो हाथ उसके बूब्स पर रख दिये. फिर मैने पूछा "क्या कभी कभी ब्रेस्ट मेम भी

दर्द होता है?"

"दर्द तो नहीम डाक्टर साब.लेकिन भारीपन फ़ील होता है.ब्रेस्ट कुछ भारी–भारी से रहते हैम"

"देखिये, मै सही इलाज तभी कर सकता हूम जब आप मुझे अपनी पूरी चेस्ट का एक्सामिनेशन करने दे, और इसके लिये आपको अपनी कमीज़ उतारनी होगी"

सरीता को इस खेल मेम मज़ा तो आ रहा था लेकिन वो डर भी रही थी

"भैया, देख के आओ के मम्मी और शिल्पि सो रहे है न"

"मै अभी देख के आता हुम"

मै नीचे मम्मी और शिल्पि को देखने गया, दोनो ही सो रहे थे और लाईट भी आ गयी थी, सो गरमी से दोनो के जागने का कोई डर नहीम था

"मै देख के आ गया, दोनोम सो रहे हैम, और लाईट भी आ गयी है, मै ए.सी. आन कर देता हूम"

"नहीम भैया ए.सी. की ज़रूरत नहीम,ऐसे ही ठीक है"

" हाम तो शुरु करे खेलना?"

"हाम"

"हाम, तो आपको अपनी कमीज़ उतारनी ही पडेगी मधु जी"

"ठीक है डाक्टर साब अगर इसके बिना एक्सामिनेशन पासिबल नहीम तो उतार देती हूम"

सरीता ने अपनि कमीज़ उतार दी. उसने कमीज़ के अन्दर कुछ भी नहीम पहना था. अब वो मेरे सामने सर से लेकर वेस्ट तक बिल्कुल नग्मी थी

"तो आपको चेस्ट मेम भारीपन महसूस होता है"

"जी डाक्टर.अब आप मेरी चेस्ट पर हाथ लगा कर एक्सामिनेशन कीजीये न"

मैने सरीता के दोनो बूब्स को पकडा और दबाना शुरु किया. उसके मुमः से आअहह्ह निकल गयी. ओ बोली

"डाक्टर..आपके दबाने से ब्रेस्ट को काफ़ी आरां मिल रहा है..अ ह ह?"

"आपके ब्रेस्ट का भारीपन मै अभी खतं कर सकता हूम"
"कैसे?"
"आपकी ब्रेस्ट को चूस के"
"क्या..इससे भारीपन खतं हो जायेगा.आर यु शुअर?"
"येस"
"तो फिर चूस लीजीये.मै ठीक होने के लिये कुछ भी कर सकती

हूम..कुछ भी..जस्ट कुछ भी"
मैने सरीता का लेफ़्ट निप्पल अपने मूः मै लेकर चूसने लगा
"अह्हह.डाक्टर..ऊओस्स्श्ह.कितना आरां मिल रहा है.दूसरे ब्रेस्ट मेम भी भारीपन है..उसे भी चूसीये ना"
मै एक हाथ से सरीता का लेफ़्ट बूब दबा रहा था और राईट बूब मेरे
मूः मेम था
"ऊस्सुउह्हह्ह.डाक्टर साब.आप तो मेर दूध पी रहे है"
"दूध कि वजः से ही भारीपन है...दूध खतं तो भारीपन
खतं"
फिर मै १० मिनट तक उसके बूब्स ही सक करता रहा और वो मज़े मेम आहे भरती रही. अब वो पूरी मस्ती मेम थी. मै उसके बूब्स चूस रहा और उसने मुझे अपनी बाहोम मेम कस लिया . मैने बूब्स से मुः हटा के उसके लिप्स पर रखा तो उसने अपनी जीभ मेरे मुः मेम डाल दी और हं एक दूसरे की जीभ चाटने लगे . फिर मै बोला
"बस मै आपको एक इन्जेक्शन भी लगा देता हू..उस से आपको पूरा आरां मिल जायेगा"
"डाक्टर साब.इन्जेक्शन कहाम लगाएन्गे..हिप्स पे?"
"ओब्विअस्ली..अब आप ज़रा अपनी सल्वार खोल दीजीये"
सरीता ने बिना कुछ कहे अपनी सल्वार खोल दी और पेट के बल लेट गयी. ऐने उसकी सल्वार उतार के उसकी घुटनोम तक कर दी और अपने
हाथोम से उसकी आस और हिप्स दबाने लगा
"डाक्टर साब .मै बताना भूल गयी थी के मेरे थाईज़ के बीच मेम चुभन सी महसूस होती है"

"थाइज़ के बीच मेम..और कहीम तो नहीम होती ?...जैसे कि..हिप्स के
बीच मेम?"
"हाम . हिप्स के बीच मेम चुभन लगती है"
"तो आप सीधी लेट जाईये और अपने लेग्स वाईड कर लीजीये"
सरीता अपने लेग्स खोल के लेट गयी . मैने पहली बार अपनी बहन की चूत देखी और देख ते ही सरीता की चूत को चूसने लगा
"ऊऊओ... उ उ उ श श श्हह...भैया मम्मी जाग तो नहीम जायेम्गी"
"मम्मी अभी एक घन्टे से पहले नहीम जागेम्गी"
मैने अपनी शर्ट निकाल दी. सरीता पूरी मस्ती मेम थी . अब वो इस खेल को लेके सिरियस हो गयी थी
"ऊऊ.हह्ह.भैया.ओ ओ ओ"
"सरीता..तू तो कमाल की चीज़ है.तेरे ब्रेस्ट और हिप्स ने तो मुझे

पागल कर दिया है..और तेरी चूत तो बहुत मीठी है रे"
"ऊह्ह..रीअली भैया..आप की बाडी कुछ कं नहीम है..आपकी मसल्स तो कमाल है ..आपकी मज़बूत चेस्ट मेरे ब्रेस्ट को दबाये तो कितना
अच्छा लगेगा"
फिर मैने अपनी पेन्ट भी निकाल दी . अब हं दोनो भाइ–बहन बिल्कुल नम्गे थे
"ऊह्ह..भैय.आप कितना अच्छा चाटते हो.ऊऊ.आह्ह्ह.भैया.आह्ह्ह.मेरा पेशाब निकलने वाला है.ओ ओ ह्ह...अपनी पूरी जीभ मेरी चूत के अन्दर
कर दो.आह्ह्ह"
मैने चाटना बहुत तेज़ कर दिया और जैसे ही वो झडी उसका पूरा योनि–रस पी गया
"आह्ह्ह..भैया मज़ा आ गया"
क्या मस्ती क्या मआ आया था उस दिन.
आगे और है.